|| श्री स्वामी सामर्थ ||

|| काली का खप्पर|

स्वामी बोले खप्पर की महिमा सुनाके भगत की बढावे काली की गरीमा।।
लेके खप्पर उडावे धमाल।।
दीन भगत के जीवन मे करावे कमाल।।
खप्पर धरती खप्पर आकाश।।
खप्पर तीन लोक मे करे निवास।।
पहला खप्पर ॐकार का दुसरा खप्पर सिद्धों का।।
तीसरा खप्पर धरती सारी ।।
चौथा खप्पर की ज्योती प्रकाश।।
पाँचवा खप्पर काली का मिटावे अघोरी का पाश।।
कौन खप्पर आटे बांटे ।।
कौन खप्पर बह्मा बांटे।।
कौन खप्पर खाए खीर कौन खप्पर उद्धारे शरीर।।
चांदी खप्पर आटे बांटे ।।
सोन खप्पर ब्रह्मा बांटे।।
जहरी खप्पर खाए मिठी खीर मिट्टी खप्पर उद्धारे शरीर।।
यह स्वामी के महाकाली के खप्पर का मंत्र।।
चिंतन करने से छुटे परतंत्र।।
महाकाली लेके खप्पर दीन भगत को देवे छप्पर।।

सुख से झुलाके दुनिया को देवे टक्कर।।
श्री काली खप्पर माहा तेजसो माहा चैतन्य माहामुक्ती प्रदायको
रिद्धी सिद्धी दायको अन्नपूर्णा परिपूर्णा माहा पात्रे माहा सौभाग्य दायको।।
माहा हस्त धरा देवी संपुर्ण विश्व भोजन प्रदायीनी।।
करी माहा मोहा माहा माया माहा देवो वंदीता।।
भस्मांग धरा देवी माहा भैरवी स्मशानवासीनी।।
संपूर्ण कष्ट निवारीणी संपूर्ण प्रसन्नता प्रदायीनी।।
पंचतत्व माहा काय माहा प्रलयंकर माहा पात्र।।
त्रिपुंड्र धराश्च त्रिलोचनी अभय वरदायीनी।।
माहा भोग विकट भोग संकट भोग भोग भोग्या
दिव्य भोगीनी भोग स्वरूपा माहा माया माहा त्रिपुंड्र प्रदायीनी।।
खं खं खं खं खं शत्रु ह्दय वेधीने ।।
माहा पात्र विद्युत संचलितं शत्रु विक्राल मर्दाने।।
वैरी विनाशो माहा भाग्यो अति रमणिय माहा पात्री ।।
दिव्य शक्ति माहा शक्ति पूर्ण शक्ति विक्राल के।।
माहा काल कराल पोषिणी माहा घोष भंजनी।।
कुपीतं सुपीतं जुपीतं ताम्रवर्ण माहा विक्राल के।।
माहा विध्वंस दायिनी त्वं समस्त शत्रु विजीर्णे
वडवानल दावानल हुताशन चिताग्नी संपूर्णे।।
शत्रु चित्र भंग करो तुम शत्रु अंग प्रत्यंग छेदिनी।।
अकाल महाकाल विकट विक्राल शत्रु मेत्रु प्रदायिनी।।
माहा अग्नी माहा ज्वाले प्रफुल्ल प्रफुल्ल प्रज्वलीतं।।
शत्रु परिवारस्य संपूर्ण भंजय भंजय नाशय नाशय ।।
ग्रसिने ग्रसिने खादय खादय दुर्घटना क्रमशः मारय मारय ।।

स्मशान विहीन वस्त्र विहीन अन्न विहीन शवस्य विक्षिप्तय विक्षिप्तय
विदीर्णे विदीर्णे चुर्णे चुर्णे कुरू कुरू ।।
कं खं गं घं ङ खडान् खडान् कुरू कुरू स्वाः।।
माहा पात्र सुपात्र घोर घोर अघोर अघोर ।।
प्रतीफल पुजीते माहा वैरी ज्ञातो अज्ञातो वैरी संपूर्ण वैरी विनाशिनी।।
स्फोट स्फोट विस्फोट विस्फोट महाप्रलय विस्फोटीके।।
सकल शत्रु संहारीके च विघातीके कुरू कुरू
खं रं खं रं रं रं रं रं रं शत्रु शरीरे अग्नी प्रवाहीके ।।
ज्वरादी विशादादि शत्रुन प्रदय प्रदय भंजय भंजय ।।
पिडा प्रतीपालीके माहा पिडा प्रकाशीके।।
त्रोटय त्रोटय भंजय भंजय छुडय छुडय।।
समस्त वैरी समुल नष्टय नष्टय विकटय विकटय ।।
विकट स्वरूप महापाचक विक्षीप्तय विक्षीप्तय ।।
त्वं शिघ्रं करोतु शत्रुन विक्षिप्तय शिरोधरा रोग करो तुम।।
शत्रु ह्दय गती अवरोधकं नासिका श्वासं प्रतीरोधकं करोतु।।
त्वं शत्रु नेत्रज्योत करोतु क्षमासकं शत्रु कर्ण छेदकं च।।
शत्रु जिव्हा परीपूर्ण पिडा प्रदायीने ।।
शत्रु कंठ वाणी हिनं ।।
करो त्वं भयंकर पिडा प्रदायीनी ।।
घात घात आघात आघात करोतु ।।
शत्रु ह्दयकं शत्रु भूजा दंडच मेरूदंड विदीर्णे विदीर्णे।।
भयंकर उदर पिडा प्रदायीने शत्रु जंघा त्रोटय त्रोटय मर्दय मर्दय।।
अंडकोषकं गुदांच छेदय अतिभयंकर पिडां शत्रु चरण विखंडके।।
नख शिखांच संपूर्ण शत्रु शरीरं भस्मांग कुरू कुरू ।।

अग्नि पिडा देही देही खं खं खं खं खं माहा पात्रे स्वाः ॥
त्रिपुंड्र धारक माहापात्रे त्वं देवी भगवती ॥
माँ जगदंबीके हस्त सुशोभितं माँ रक्षा करोतु ॥
त्वं संपूर्ण रूपे नमोस्तुते॥

॥ श्री गुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥
॥ श्री स्वामी समर्थार्पर्ण मस्तु॥